

शीतला माता चालोसा

दोहा 1

जय जय माता शीतला, तुमहिं धरै जो ध्यान।
होय विमल शीतल हृदय, विकसै बुधि बल ज्ञान॥

दोहा 2

घट घट वासी शीतला, शीतल प्रभा तुम्हार।
शीतल छड़ियाँ में झूलई, मइया पलना डार॥

चौपाई 1

जय जय श्री शीतला भवानी।
जय जग जननि सकल गुणखानी॥

चौपाई 2

गृह गृह शक्ति तुम्हारी राजित।
पूरण शरदचन्द्र सम साजित॥

चौपाई 3

विस्फोटक से जलत शरीरा।
शीतल करत हरत सब पीरा॥

चौपाई 4

मातु शीतला तव शुभ नामा।
सबके गाढ़े आवहिं कामा॥

चौपाई 5

शोकहरी शंकरी भवानी।
बाल-प्राणरक्षी सुखदानी॥

चौपाई 6

शुचि मार्जनी कलश कर राजै।
मस्तक तेज सूर्य सम साजै॥

चौपाई 7

चौंसठ योगिन संग में गावैं।
वीणा ताल मृदंग बजावैं॥

चौपाई 8

नृत्य नाथ भैरों दिखरावैं।
सहस शेष शिव पार न पावैं॥

चौपाई 9

धन्य धन्य धात्री महारानी।
सुर नर मुनि तव सुयश बखानी॥

चौपाई 10

ज्वाला रूप महा बलकारी।
दैत्य एक विस्फोटक भारी॥

चौपाई 11

घर घर प्रविशत कोई न रक्षत।
रोग रूप धरि बालक भक्षत॥

चौपाई 12

हाहाकार मच्यो जग भारी।
सक्यो न जब कोई संकट टारी॥

चौपाई 13

तब मइया धरि अद्भुत रूपा।
कर में लिये मार्जनी सूपा॥

चौपाई 14

विस्फोटकहिं पकड़ि कर लीन्हो।
मुसल प्रहार बहुविधि कीन्हो॥

चौपाई 15

बहु प्रकार वह विनती कीन्हा।
मैया नहीं भल मैं कछु चीन्हा॥

चौपाई 16

अब नहिं मातु काहु गृह जइहैं।
जहँ अपवित्र वही घर रहिहैं॥

चौपाई 17

पूजन पाठ मातु जब करिहैं।
होइ आनन्द सकल दुख हरिहैं॥

चौपाई 18

भभकत तन शीतल ह्वै जइहैं।
विस्फोटक भय घोर नसइहैं॥

चौपाई 19

श्री शीतलहिं भजे कल्याना।
वचन सत्य भाषे भगवाना॥

चौपाई 20

विस्फोटक भय जिहि गृह भाई।
भजै देवि कहँ यही उपाई॥

चौपाई 21

कलश शीतला का सजवावै।
द्विज से विधिवत पाठ करावै॥

चौपाई 22

तुम्हीं शीतला जग की माता।
तुम्हीं पिता जग की सुखदाता॥

चौपाई 23

तुम्हीं जगद्धात्री सुखसेवी।
नमो नमामि शीतले देवी॥

चौपाई 24

नमो सुखकरणी दुखहरणी।
नमो नमो जगतारणि तरणी॥

चौपाई 25

नमो नमो त्रैलोक्य वन्दिनी।
दुखदारिद्रादिक निकन्दिनी॥

चौपाई 26

श्री शीतला, शेढला, महला।
रुणकी झुणकी मातु मन्दला॥

चौपाई 27

हो तुम दिगम्बर तनुधारी।
शोभित पंचनाम असवारी॥

चौपाई 28

रासभ, खर, बैशाख सुनन्दन।
गर्दभ, दुर्वाकन्द निकन्दन॥

चौपाई 29

सुमिरत संग शीतला माई।
जाहि सकल दुख दूर पराई॥

चौपाई 30

गलका, गलगण्डादिक जु होई।
ताकर मन्त्र न औषधि कोई॥

चौपाई 31

एक मातु जी का आराधन।
और नहिं कोई है साधन॥

चौपाई 32

निश्चय मातु शरण जो आवै।
निर्भय मन इच्छित फल पावै॥

चौपाई 33

कोढ़ी, निर्मल काया धारै।
अन्धा, दृग निज दृष्टि निहारै॥

चौपाई 34

बन्ध्या नारि पुत्र को पावै।
जन्म दरिद्र धनी होइ जावै॥

चौपाई 35

मातु शीतला के गुण गावत।
लखा मूक को छन्द बनावत॥

चौपाई 36

यामें कोई करै जनि शंका।
जग में मैया का ही डंका॥

चौपाई 37

भनत रामसुन्दर प्रभुदासा।
तट प्रयाग से पूरब पासा॥

चौपाई 38

पुरी तिवारी मोर निवासा।
ककरा गंगा तट दुर्वासा॥

चौपाई 39

अब विलम्ब मैं तोहि पुकारत।
मातु कृपा कौ बाट निहारत॥

चौपाई 40

पड़ा द्वार तव आस लगाई।
रक्षा करहु शीतला माई॥